Dr. Sheela. T. Nair (2021-2022)

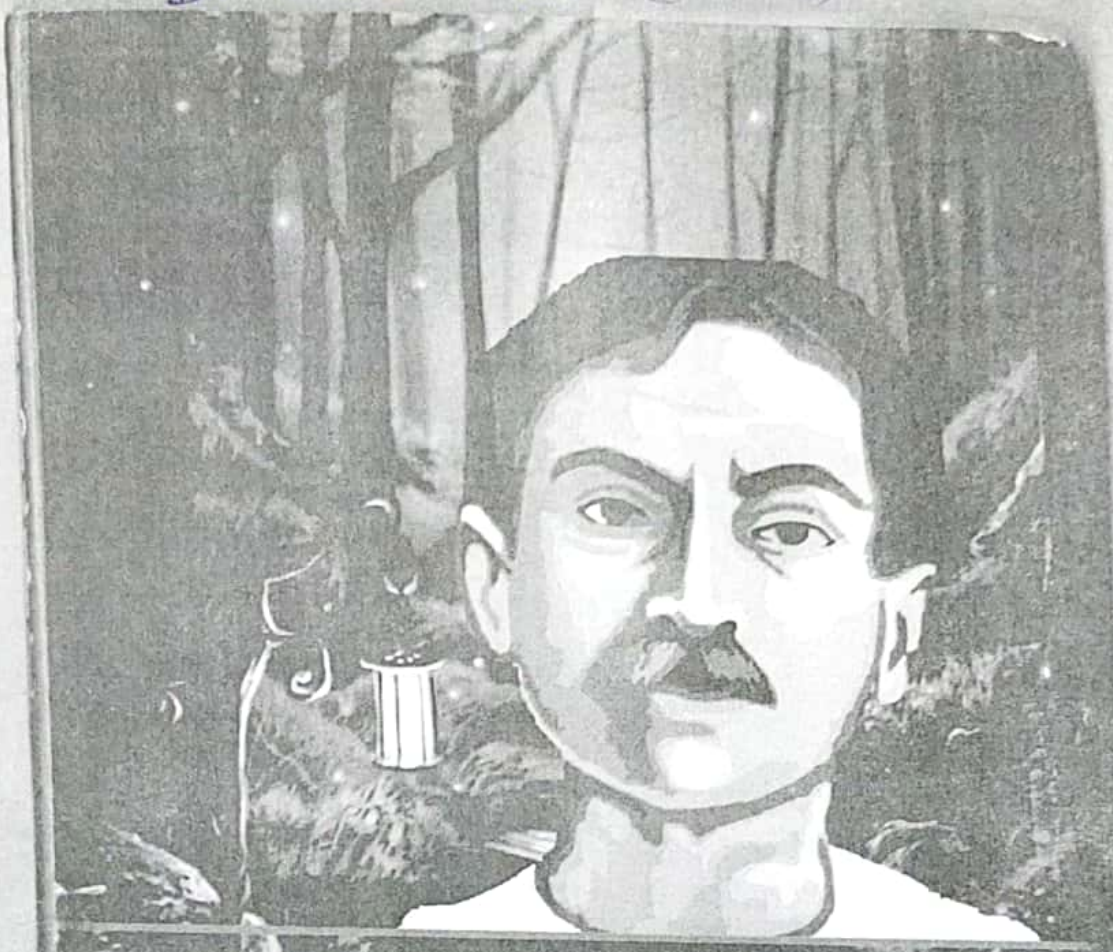

# भारतीय साहित्य के मसीहा प्रेमचंद

डॉ. राजेश कुमार आर.

Dr. Sheela. T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Dr. Sheela. T. Nair

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सपादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

**ISBN : 978-93-86784-48-3**

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | भारतीय साहित्य के मसीहा : प्रेमचंद |
| सम्पादक | : | डॉ. राजेश कुमार आर |
| प्रकाशक | : | साहित्य रत्नाकर<br>'रामालय', म. नं. 15, प्रथम तल सिद्धार्थ नगर,<br>गूबा गार्डेन, कल्याणपुर, कानपुर-208016 (उ.प्र.)<br>Mob. - 08960421760, 09044344050 |
| संस्करण | : | प्रथम संस्करण, 2021 |
| © | : | सम्पादकाधीन |
| मूल्य | : | ₹ 250.00 मात्र |
| शब्द सज्जा | : | राज ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर |
| मुद्रक | : | आर.बी. ऑफसेट, नौबस्ता, कानपुर |

**Bhartiya Sahitya Ke Maseeha : Premchand**
Edited by **Dr. Rajesh Kumar R**
Price : Rs. Two Hundred Fifty Only

Dr. Sheela. T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
N.S.S. COLLEGE
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

# अनुक्रम


- नाटककार प्रेमचंद – डॉ. पी. जे. शिवकुमार 13
- नारीवाद के समर्थक प्रेमचंद 22
  – डॉ. षीना ईप्पन
- 'कफन' – कहानी की प्रासंगिकता 27
  – डॉ. उषा कुमारी. के. पी.
- प्रेमचंद की कहानियाँ–सामाजिक सच्चाई का दस्तावेज 31
  – डॉ. बिनु डी.
- साहित्यकार प्रेमचंद – डॉ. जी. प्रदीप 36
- गोदान' बदलते सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य में 39
  – डॉ. लीना बी. एल.
- प्रेमचंद की कहानियों में नारी–जीवन 44
  – डॉ. लक्ष्मी एस. एस.
- निबन्धकार प्रेमचन्द – डॉ. शीला टी. नायर 49
- प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय समाज 52
  – लिबिल जेक्कब
- 'कफन' कहानी में बुलन्द दलित चेतना 55
  – डॉ. दीपा कुमारी
- प्रेमचन्द के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना 59
  – शिल्पा. एस. एल.
- प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक विचार 62
  – सुहाना. एन.
- प्रेमचन्द की कहानी यात्रा– धन्या एस. 65
- प्रेमचंद की रचनाओं में प्रतिफलित गाँव 68
  – कीर्ति एस.


Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE



Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

# निबन्धकार प्रेमचद

– डॉ. शीला टी. नायर
असिस्टेंट प्रोफसर, एन. एस. एस. कॉलेज
पन्तलम्, पत्तनतिट्टा, केरल

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग पुरुष थे। उन्होंने उपन्यास, कहानी ही न लिखकर निबन्ध जैसे विचार प्रधान विषय पर भी अपनी लेखनी चलाई है। निबन्धों में उन्होंने अपने गम्भीर विचार प्रकट किये। प्रेमचंद किसी भी क्षेत्र में कम नहीं थे। उपन्यास हो या कहानी, सम्पादन हो या निबन्ध सभी क्षेत्र में अपनी अद्वितीय छाप छोडी है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में वही किया जो राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी ने किया। अपने गम्भीर निबन्धों के माध्यम से लेखन विधा को उन्नत करने का सफल कार्य किया।

प्रेमचंद के कथासाहित्य के समक्ष उनका समाज विश्लेषक और चिंतक रूप ओझल ही रहा। समाज, मानव–सम्बन्धों से बनता है और उन सम्बन्धों के निरीक्षण–परीक्षण की दृष्टि से प्रेमचंद से अधिक सावधान और तत्पर लेखक मिलना दुर्लभ है। उनके गद्य साहित्य में मानव–सम्बन्ध विचारगत होकर उभरे। सामाजिक चेतना और स्वाधीनता पूर्व के दर्द के वे दृष्टा ही नहीं, भोक्ता भी थे। इसलिए वे मात्र कथाकार ही न होकर, इन समस्याओं से अपने निबन्धों में सीधे तौर पर जुड़े थे। उनका कथा साहित्य जितना विपुल है, उतना ही गम्भीर उनका निबन्ध साहित्य है। प्रेमचंद के निबन्ध साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें सुलझी हुई जीवन दृष्टि है।

प्रेमचंद के निबन्ध संग्रह में 'कुछ विचार', और 'विविध प्रसंग' है–जीवन में साहित्य का स्थान, पुराना जमाना नया जमाना, कहानी कला (1, 2, 3) उपन्यास, उपन्यास का विषय, एक भाषण, हिन्दी–उर्दू की एकता, उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी, राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ, कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, स्वराज के फायदे कलम–तलवार और त्याग (जीवनीपरक लेख) साहित्य का उद्देश्य, महाजनी सभ्यता इन सभी विषयों पर प्रेमचंद ने वैचारिक धरातल पर अपने चिन्तन प्रस्तुत किए। बिना किसी जटिल बौद्धिक प्रयास के, बिना किसी काव्यात्मक कौशल के सही बात से साक्षात्कार कराना वह बहुत अच्छी तरह जानते थे। उनके निबन्धों में तीन बातें सर्वत्र पायी जाती है–संवेदन की गहनता, विचारों की व्यापकता और अभिव्यक्ति की सहजता।

प्रेमचंद ने जब साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय स्वाधीनता आन्दोलन राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका था और उसका नेतृत्व गाँधी जी कर रहे



Sml.
Dr. Sheela T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252271
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

थे। प्रेमचंद पर गाँधी विचारधारा का बहुत गहन प्रभाव था, जो उनकी समस्त रचनाओं में परिलक्षित होता है। प्रेमचंद ने स्वयं स्वीकार किया है–'मैं दुनिया में महात्मा गाँधी को सबसे बड़ा मानता हूँ'। उनके निबन्धों में समसामयिक जीवन और उससे सम्बद्ध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक–सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण मिलता है। डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने प्रेमचंद के समस्त साहित्य में समसामयिकता को बड़े सहज रूप में स्वीकार किया है। इस तरह वह समसामयिकता के माध्यम से आधुनिकता को अभिव्यक्ति कर देते हैं और सामाजिक धरातल के यथार्थ पर इसे स्वीकारते हैं।'

प्रेमचंद ने अपने निबंधों में भी तत्कालीन सामजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं को इतने विस्तृत और जीवंत रूप में चित्रित किया है कि वह युग साकार होकर आंखों के सम्मुख प्रस्तुत हो जाता है। प्रेमचंद कहते हैं कि– 'समाज की कुप्रथा की ओर ध्यान दिलाने के लिए यथार्थवाद अत्यन्त उपयुक्त है।'[1] अपने निबंधों के माध्यम से उन्होंने समाज के पीड़ित तथा दुर्बल वर्गों के हितों के प्रति जनमानस में चेतना उत्पन्न की है। उनके निबंध 'कलमालवार और त्याग', 'कुछ विचार' तथा 'विविध प्रसंग' (तीन खंड) में संकलित हैं। 'कलमालवार और त्याग' में संकलित अधिकांश निबंध जीवनीपरक है जो सन् 1903 और 1904 में उर्दू पत्रिका 'जमाना' में पहले पहल प्रकाशित हुए थे। इनमें ऐतिहासिक पुरुषों, राजाओं, राजनीतिक नेताओं, साहित्यकारों, समाज सुधारकों आदि के जीवन वृतान्त प्रस्तुत किये गए हैं। प्रेमचंद ने ऐसे जीवन चरित्र लिखे जो प्रेरक और उद्‌बोधक थे और जिनसे तत्कालीन समाज में राष्ट्रीय भावना और सामजिक चेतना को बल मिल सकता था। उनका लक्ष्य इन महापुरुषों के जीवन के उन पक्षों को उजागर करना था जिनके कारण ये महापुरुष बने।

'कुछ विचार' में प्रेमचंद के साहित्यिक निबन्ध संकलित हैं। साहित्य को वे केवल मनोरंजन का साधन नहीं, अपितु समाज का पथप्रदर्शक मानते थे। उनके अपने शब्द में, 'साहित्य जीवन की आलोचना है, चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानियों के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।'[2] 'कुछ विचार' में प्रथम निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' है, जो प्रगतिशील लेखक संघ के लखनऊ अधिवेशन में सभापति पद से दिया गया भाषण है। कहानीकला और उपन्यास निबन्धों में उन्होंने साहित्य की इन विधाओं का सर्वांगीण विवेचन करते हुए श्रेष्ठ कहानी और उपन्यास के लक्षण बताये हैं। 'उपन्यास का विषय' शीर्षक निबन्ध में मनोरंजन प्रधान उपन्यासों की परम्परा को मोड़कर उपन्यास विधा को सामाजिक जीवन और समाज की समस्याओं से जोड़ने पर बल दिया गया है। 'जीवन में साहित्य का स्थान' निबन्ध भी साहित्यकारों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से लिखा गया है। 'उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी, राष्ट्रभाषा, उर्दू, हिन्दी और उसकी समस्यायें, कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार और 'एक भाषण' शीर्षक निबन्धों में भाषा सम्बन्धी प्रश्नों का विस्तारपूर्वक विवेचन करते हुए राष्ट्रभाषा



Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

का स्वरूप निर्धारित करने का प्रयास किया गया है। प्रेमचंद कहते है–'राष्ट्र को दृढ और बलवान बनाने के लिए देश में सांस्कृतिक एकता का होना बहुत आवश्यक है। और किसी राष्ट्र की भाषा तथा लिपि इस सांस्कृतिक एकता का एक विशेष अंग है।'[3]

प्रेमचंद के अधिकांश निबंध वस्तुतः 'विविध प्रसंग' में संकलित हैं जिसके तीन खण्ड है। ये निबंध भारतीय संस्कृति, शिक्षा, तत्कालीन राजनीतिक स्थिति, साहित्य आदि विविध विषयों से सम्बद्ध है। दूसरे खंड में उनके हिन्दी के मौलिक निबन्ध और सम्पादकीय टिप्पणियाँ हैं। तीसरे खण्ड में संकलित निबंधों का विभाजन 'साहित्य दर्शन' धर्म, समाज, स्वदेशी, 'शिक्षा–संस्कृति', महिला जगत, राष्ट्रभाषा आदि शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है। इन निबन्धो का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचंद अपने युग की समस्याओं के प्रति सतत जागरूक रहे। उन्होंने सभी समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओ का विवेचन और विश्लेषण करते हुए उनका समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। उनके निबन्धो का विषय–क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन, सत्याग्रह, स्वदेशी, विदेशी की दमननीति जैसे राजनीतिक विषयों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का सभी विषयों पर निबंध लिखे। समाज मे व्याप्त निर्धनता, अज्ञानता, रूढिवादिता और शोषण पर कटु प्रहार किये और सामान्यतः सुधारवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। अछूतों, महिलाओं तथा शोषित वर्ग के अधिकारों के प्रति जनमानस में चेतना उत्पन्न करने का श्रेय भी इन निबन्धों के लेखक को दिया जा सकता है।

संक्षेप में, भारतेन्दु–युग में समाज सुधार सम्बन्धी निबन्ध लेखक की जिस परम्परा का सूत्रपात हुआ था उसे प्रेमचंद ने गहनता, व्यापकता और गति प्रदान की। उन्होंने पारिवारिक विघटन और संतति–निग्रह जैसी नारी जीवन से सम्बन्धित नवीन समस्याओं पर भी निबन्ध लिखे और महिलाओं के लिए समान अधिकारों की मांग की। दूसरी ओर किसानों और मजदूरों की दीन–हीन पूँजीपतियों द्वारा उनके शोषण और बेगार की समस्या पर निबन्ध लिखकर प्रेमचंद ने समाज के इस वर्ग की समस्याओं को भी उजागर किया है। ये निबन्ध इस तथ्य को भी प्रमाणित करते हैं कि भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग रखते हुए भी प्रेमचंद संकीर्ण विचार धारा के नहीं थे। उन्होंने परम्परागत मान्यताओं, रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का खुलकर विरोध किया है। वस्तुतः उनका दृष्टिकोण समन्वयवादी था। चाहे सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों का प्रश्न हो और चाहे भाषा या धर्म का, उनका दृष्टिकोण संकीर्ण और एकांगी नहीं बल्कि एक युग द्रष्टा का था।

**सन्दर्भ ग्रंथ :**


1. उपन्यास–प्रेमचंद–कुछ विचार–पृ.सं. 49
2. साहित्य का उद्देश्य – प्रेमचंद–कुछ विचार–पृ.सं.– 6–7
3. उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी–प्रेमचंद–कुछ विचार–पृ.सं.–101


❖❖❖



Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:27 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner